School of मानविकी विद्याशाखा

## Certificate

I hereby declare that the short synopsis Research Topic "सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Subject हिन्दी under school of मानविकी विद्याशाखा of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. सत्यपाल तिवारी and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

रागनी
(Signature)
Name of Candidate- रागनी
En. No.- 2301304

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
(Signature)
(Name) प्रो0 सत्यपाल तिवारी
Faculty of (Subject ---)

(Signature)
(Name) प्रो0 सत्यपाल तिवारी

**(Director of Concerned School of Studies)**

02/06/25
(Signature)
(Name)
**(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)**

(Approved Research Topic)

# "सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन"

## "SAMAJIK SAMRASTA MEIN SANT RAMANAND KA YOGDAN : EK ADHYAYAN"

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

## SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

**DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI**

to

**U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj**

**Submitted by**

प्रस्तुतकर्ता


रागनी

**Name of Guide-**
**Prof. Satyapal Tiwari**
शोध निर्देशक का नाम—
प्रो0 सत्यपाल तिवारी

**Name of Candidate-Ragni**
शोधार्थिनी का नाम— रागनी
Enrollment No.- 2301304
नामांकन सं0—2301304
Subject- Hindi Literature
विषय—हिन्दी साहित्य

**Faculty of (Hindi)**
मानविकी विद्याशाखा
**School of Humanities**
**U.P. Rajarshi Tandon Open University**
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
**Shantipuram, (Sector -F) Phaphamau, Prayagraj - 211021**


रागनी

# सार (Abstract)

**"सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन"** विषय पर प्रस्तुत यह शोध कार्य संत रामानंद तथा अन्य संतों में सन्निहित सामाजिक समरसता की मूल चेतना तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों और दूरगामी प्रभावों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

संत रामानंद को संतों के संत की उपाधि दी जाती है क्योंकि वे ही ऐसे प्रथम संत थे, जिन्होंने आम जनता के हित के निहतार्थ चिन्तन एवं मनन करते हुए उस पर कार्य किया। कहते हैं संत की प्रवृत्ति ही यही होती है कि वह निजी स्वार्थ से परे होकर समाज के कल्याण की बात सोचता है।

सामाजिक समरसता एक स्थापना या सिद्धान्त भी है, भारतीय संस्कृति की पाहचान भी है, प्रत्येक सामाजिक प्राणी की चेतना में विद्यमान मूल भाव भी है।

इसका प्रभाव किसी भी देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर भी देखा जाता है तथा रामानंद एवं उनके युग को प्रभावित करने के साथ–साथ वर्तमान में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य इसी का अध्ययन एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन है।

---

Keyword :- सामाजिक समरसता, रामानंद, मूल चेतना, संत की प्रवृत्ति, लोक कल्याण, भारतीय जीवन दर्शन का प्रतिबिंब।

# CONTENTS


| S. No. | Description | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | Introduction | 1-2 |
| 2 | Literature Review | 2-7 |
| 3 | Description Broad Area | 7-8 |
| 4 | Objectives of the Study | 8-8 |
| 5 | Research Methodology | 8-11 |
| 6 | Expected Outcome of the Research | 11 |
| | References | |
| | Plagiarism Report | |


रागनी

**1. शोध विषय की प्रस्तावना–**

प्रत्येक युग का साहित्य सामाजिक परिस्थितियों की उपज होता है ठीक उसी प्रकार से मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन को तीव्र और गतिशील बनाने में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने भी योगदान दिया है। किन्तु मूलतः वह भारतीय चिन्तन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, सहस्त्र वर्षों के आध्यात्मिक चिन्तन का प्रतिफलन है। उपनिषद उसके मूल स्रोत हैं। तत्वज्ञ ऋषियों द्वारा आत्मा, परमात्मा, मोक्ष, सृष्टि और माया आदि के सम्बन्ध में जो गूढ़ चिन्तन हुआ, उपनिषद उसी के कोष हैं। उसके बाद अध्यात्मक की यह धारा अविच्छिन्न रूप से परवर्ती शताब्दियों में प्रवाहित होती रही।

सामाजिक समरसता का अर्थ है सामाजिक समानता अर्थात् जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़मूल से उन्मूल कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना। समरसता का अर्थ है सभी को अपने समान समझना। सृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है और उनमें एक ही चैतन्य विद्यमान है, इस बात को हृदय से स्वीकार करना।

यदि देखा जाए तो पुरातन भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी के साथ किसी भी तरह का भेदभाव स्वीकार नहीं किया गया है। हमारे वेदों में भी जाति या वर्ण के आधार पर किसी भेदभाव का उल्लेख नहीं है। वेदों में जाति के आधार पर नहीं अपितु कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बतायी गयी है।

सन्त कवियों ने वर्ण–व्यवस्था का उल्लेख इस रूप में किया है कि जो व्रह्म को जानता है वह ब्राहाण है, जो समाज की रक्षा करें वह क्षत्रिय है, जो समाज का पोषण करें वह वैश्य है और जो समाज की सेवा करें वह



रागनी

शूद्र है। इनके अनुसार कार्य से ही वर्ण बनता है, जन्म से नहीं। मजहब के भेद को यह स्वीकार नहीं करते थे, क्योंकि ब्रह्म एक ही है उसे चाहे जिस–जिस नाम से पुकारो।

मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन की शुरूआत सर्वप्रथम, दक्षिण के आलवार तथा नयनार संतों द्वारा की गई थी। बारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रामानंद द्वारा यह आन्दोलन दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाया गया। इस आन्दोलन को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। भक्ति आन्दोलन का उद्देश्य था– हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार तथा इस्लाम एवं हिन्दू धर्म में समन्वय स्थापित करना। अपने उद्देश्यों में यह आन्दोलन काफी हद तक सफल रहा।

भक्ति आन्दोलन से हिन्दू–मुस्लिम सभ्यताओं का सम्पर्क हुआ और दोनों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। भक्तिमार्गी संतों ने समता का प्रचार किया और सभी धर्मों के लोगों की आध्यात्मिक और नैतिक उन्नति के लिये प्रयास किये। तत्कालीन भारतीय समाज की शोषणकारी वर्ण व्यवस्था के कारण निचले वर्णों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। भक्त–संतों द्वारा दिये गए सामाजिक सौहार्द्र और सद्भाव के संदेश ने लोगों को प्रभावित किया।

'हिन्दी शब्द सागर' में संत का अर्थ दिया गया है– साधु, त्यागी, महात्मा, ईश्वर भक्त, धार्मिक पुरूष। इस शब्दावली को साकार करने वाले एक महान संत तथा समाज सुधारक हुए जो थे 'संत रामानंद'।

स्वामी रामानन्द का जीवन–परिचय आज भी हमारे समक्ष निर्विवाद रूप में उपलब्ध नहीं है। इनका जन्म सन् 1299 ई0 में तथा मृत्यु सन् 1448 ई0 में हुई थी अर्थात् इन्हें 149 वर्ष का दीर्घ जीवन प्राप्त हुआ। अधिकांश विद्वान इनका जन्म–स्थान प्रयाग मानते हैं। ये एक ब्राह्मण परिवार



रागनी

में जन्में थे। इनकी माता का नाम सुशीला देवी और पिता का नाम पुण्यसदन शर्मा था।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि "इनके चरित्र–बल तथा असारधारण व्यक्तित्व के कारण इनके समकालीन हिन्दू समाज का वातावरण इनसे प्रभावित हो उठा और सर्वत्र एक प्रकार की क्रान्ति की लहर फैल गई। ये अपने समय के एक प्रभावशाली पथ–प्रदर्शक के रूप में दीख पड़ते हैं। उस युग के प्रायः प्रत्येक विशिष्ट सुधारक का इनसे किसी न किसी प्रकार से आभारी होना आज तक स्वीकार किया जाता है।"

संत रामानन्द सच्चे अर्थों में एक मानवतावादी सन्त थे तथा जन्म के आधार पर किसी भी प्रकार के वैषम्य के कट्टर विरोधी थे। अतः उन्होंने सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उपेक्षित और शोषित मनुष्यों के उद्धार और कल्याण का बीड़ा उठाया। उनकी दृष्टि में भक्ति वह साधन थी, जिसके माध्यम से शोषित और पीड़ित मानवता का उद्धार किया जा सकता है।

डॉ0 मारूतिनन्दन त्रिपाठी ने ठीक ही लिखा है कि "उच्च कुलीन ब्राह्मण, संस्कृत के मूर्धन्य पण्डित तथा प्रभावशाली वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी रामानंद जी ने तत्कालीन सामाजिक स्थितियों और उनमें अपेक्षित परिवर्तनों के अनुरूप अपनी चिन्तन धारा और कार्य–पद्धति को जिस काल–सम्मत रूप से प्रस्तुत किया उससे उनके स्वतंत्र, निर्भीक, दूरदर्शी और देश–हित को साध्य मानने वाले व्यक्तित्व की झलक मिलती है।"

तत्कालीन रूढ़िवादी पारम्परिक परिस्थितियों में इस प्रकार का उदघोष धार्मिक क्षेत्र के लिए क्रान्तिकारी, किन्तु वैदिक धर्म में आये कालगत दोषों की दृष्टि से सामयिक था। ऐसी चुनौती को स्वीकारना रामानन्द जैसे साहसी और दृढ़ संकल्पी विचारक के लिए ही सम्भव था।



रागनी

स्वामी रामानंद यह मानते थे कि राम के सगुण–निर्गुण दोनों रूप हैं। हम चाहे जिस रूप में उनकी उपासना कर सकते हैं। कबीर ने राम के निर्गुण रूप को अपनाया और तुलसीदास ने सगुण रूप को। स्वामी रामानन्द ने राघवानन्द से योग की शिक्षा प्राप्त की थी। श्री रामानन्दकृत 'सिद्धान्त पंचमात्र' से पता चलता है कि उनके साधना–मार्ग में योग और प्रेम का समन्वय था।

कबीरदास की साधना पद्धति में भी भक्ति और योग का समन्वय है। रामानंद से प्राप्त यह योगपरक भक्ति ही कबीरदास को पूर्ववर्ती सिद्धों और नाथयोगियों से अलग कर देती है।

स्वामी रामानन्द का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य है– लोक भाषा हिन्दी की स्वीकृति। इसके पूर्व रामानुज, निम्बार्क, माधव, विष्णुस्वामी आदि जितने आचार्य हुए थे, सभी ने संस्कृत में अपने सिद्धान्तों का निरूपण किया था। यद्यपि स्वामी रामानन्द ने 'वैष्णव मताब्ज भास्कर' तथा 'श्री रामार्चन पद्धति' की रचना संस्कृत में की, किन्तु उनकी अधिकांश रचनाएँ हिन्दी में हैं। उनके नाम है–**रामरक्षा स्रोत, सिद्धान्त पटल, ज्ञान लीला, ज्ञान तिलक तथा योग चिन्तामणि**।

इस प्रकार स्वामी रामानन्द ने देववाणी संस्कृत का मोह त्यागकर लोकवाणी हिन्दी को अपनाया। वस्तुतः सच्चा लोकनायक वही होता है जो अपनी बात लोकभाषा में कहे। उनके द्वारा हिन्दी भाषा अपनाए जाने का परिणाम यह हुआ कि मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन लोकोन्मुखी हो गया।

छह सौ वर्ष हुए रामानन्द का जितना व्यापक प्रभाव विभिन्न पन्थ–परम्पराओं के लोगों पर मिलता है, उतना अन्य किसी आचार्य या समाज सुधारक का नहीं। इसका प्रमाण यह है कि एक ओर सन्त मत के उत्तरी भारत के शीर्ष पुरूष कबीर उनके विचारों से जुड़ते हैं, वही दूसरी

ओर राम भक्ति की पीयूषधारा बहाने वाले तुलसीदास भी उन्हीं के सिद्धान्तों से प्रेरित तथा उन्हीं की शिष्य परम्परा के थे। सत्रहवीं–अट्ठारहवीं शताब्दी के भुड़कुड़ा की सन्त–परम्परा भी अपना आदि आचार्य रामानन्द को ही मानती है।

**स्वामी रामानन्द का अवदान–**

उन्होंने अपने भक्ति सम्बन्धी विचारों से समाज के सभी वर्गों को जोड़ने का कार्य किया। इस विषय में उनकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है–

**जाति पाँति पूछैनहिं कोई।**

**हरि को भजै सो हरि का होई।।**

इस दृष्टि से उन्होंने एक सामाजिक क्रान्ति की शुरूआत की थी। सामाजिक समरसता उस युग की बड़ी आवश्यकता थी।

हिन्दी के सन्त कवियों पर स्वामी रामानन्द का बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसका बड़ा प्रमाण यह है कि कबीर, रैदास, पीपा, सेन, नाभादास आदि हिन्दी सन्त कवि उनके ही शिष्य या उनकी शिष्य परम्परा के माने जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास का सम्बन्ध रामानन्दी सम्प्रदाय से है। आध्यात्मिक, सामाजिक और भाषा दृष्टि से कबीर, रैदास और तुलसीदास पर उनके विचारों का व्यापक प्रभाव दिखता है।

रामानन्द की इन दृष्टियों का ही प्रभाव 17वीं, 18वीं और 19वीं शताब्दी के सन्त कवियों के ऊपर भी देखा जा सकता है। इस दृष्टि से परवर्ती सन्त परम्परा के सन्त कवि बूला साहब, गुलाब साहब, भीखा साहब,



रागनी

गोविन्द साहब, देवकी नन्दन साहब और मँगरू साहब की रचनाओं में प्रभाव देखा जा सकता है।

स्वामी जी और इनके बाद हुए सभी संत हिन्दू–मुस्लिम रूढ़ियों के विरूद्ध थे। मन्दिर–मस्जिद से अलग अपने घर में ब्रह्म का अधिपत्य मानकर भजन, ध्यान, जन, साधना आदि के द्वारा उसकी अनुभूति करने का उपदेश देते थे।

**2. साहित्य समीक्षा–**

**विषय–** "सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन"

**भूमिका–**

हिन्दी साहित्य के इतिहास मों भक्तिकाल साहित्य तथा सामाजिक दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण काल माना जाता है। भक्तिकाल में भारत की राजनीतिक स्थिति में काफी उठा–पटक हुई थी तथा इसके परिणामस्वरूप भारत में मुस्लिम सत्ता स्थापित हो चुकी थी। कुछ ही स्थानों पर भारतीय शासक शासन कर रहे थे। इन सब नये परिवर्तनों के बीच भारतीय हिन्दू जनता अपने जीवन से हताश और निराश हो रही थी। तब भारतीय सन्तों ने भक्ति आन्दोलन की शुरूआत की जिससे आम जनता तक धर्म के मूल अर्थ को पहुँचाया जा सके। भक्ति आन्दोलन में रामानुजाचार्य और नामदेव का नाम अतिमहत्वपूर्ण है, इसके बाद उनकी ही शिष्य–परम्परा में संत रामानन्द का स्थान है। संत रामानंद ने धार्मिक भक्ति–आन्दोलन को नया मोड़ देते हुए सामाजिक समरसता स्थापित करने का विशेष प्रयास किया था।



रागनी

1. पूर्ववर्ती साहित्य का अवलोकन

1. **डॉ0 बदरीनारायण श्रीवास्तव "रामानंद सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव"** में यह बहुत विस्तार से उल्लिखित किया है कि किस प्रकार से संत रामानंद ने तत्कालीन परिस्थितियों को जाना–समझा तथा उस सामाजिक परिवेश में एकता और सामंजस्य का बहुत बड़ा अभाव देखा। अपनी इस अनुभूति की समस्या के निराकरण के लिए उन्होंने रामनंदी सम्प्रदाय की स्थापना की और अपने मठ में सभी को प्रवेश दिया फिर चाहे वह निम्न जाति का हो या स्त्री हो या फिर चाहे मुस्लिम समाज के लोग हों। इस पुस्तक से हमें रामानंदी सम्प्रदाय के बारे में समझने के लिए अत्यन्त सुलभ तथा ग्राह्य सामग्री प्राप्त हो जाती है।

2. **सम्पादक– डॉ0 उदय प्रताप सिंह, "जगद्गुरू रामानन्दाचार्य श्रीसम्प्रदाय (रामावत) : विविध आयाम"** विभिन्न विद्वानों द्वारा अपने–अपने मत प्रकट किये गये हैं, जिसका मूल सारांश यह है कि संत रामानंद सामाजिक चेतना से बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे। इसलिए उन्होंने सम्प्रदाय की स्थापना की और अपने रामानंदी सम्प्रदाय के द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों को एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य किया। उनको सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का अग्रदूत माना जाता है। इस पुस्तक में राष्ट्रीय चेतना में स्वामी रामानंद का प्रदेय : वर्तमान परिप्रेक्ष्य जैसे महत्वपूर्ण शीर्षकों को भी उल्लिखित किया गया है।

3. **डॉ0 उदय प्रताप सिंह, "संतों के संत कवि रामानंद"** में लिखते हैं कि संत रामानंद ने किस प्रकार से भक्ति द्वारा समाज को जोड़ने तथा एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। यह पुस्तक मुख्य



रागनी

रूप से संत रामानंद के जीवन, काव्य और सामाजिक योगदान पर केन्द्रित है।

4. **डॉ0 कन्हैया सिंह, "स्वामी रामानंद : जीवन और दर्शन"** में संत रामानंद के भक्ति–दर्शन के विषय में कहते हैं कि उनका भक्ति–दर्शन बहुत ही लचीला और समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाने वाला था। संत रामानंद के लिए भक्ति मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का साधन थी। रामानंद के राम सगुण भी हैं और निर्गुण भी, उनका मानना था कि सर्वप्रथम हम मनुष्य हैं बाद में कुछ और। हम सबको समाज में मिलजुलकर रहना चाहिए और आपसी एकता बनाये रखना चाहिए।

5. **योगेन्द्र प्रताप सिंह "युगस्रष्टा स्वामी रामानंद"** में संत रामानंद के बचपन से लेकर उनकी दिग्विजय–यात्रा, शिष्य–परम्परा तथा सरयू नदी के किनारे कई हजार हिन्दू–मुस्लिमों (जिनका धर्म परिवर्तन किया गया था) को फिर से हिन्दू धर्म में सम्मिलित करने जैसे कार्यों को पद्यात्मक रूप में पस्तुत किया है। इस पुस्तक के अध्ययन से संत रामानंद के विषय में सिर्फ रूपरेखा ही तैयार हो सकती है। इसको हम तथ्यात्मक जानकारी भी कह सकते हैं।

6. **डॉ0 धर्मपाल मेनी, "संतों के धार्मिक विश्वास"** में लिखते हैं कि संतों की धार्मिक पृष्ठभूमि ऋग्वेद काल से ही धीरे–धीरे विकसित हो रही थी। आगे चलकर बदलती हुई परिस्थितियों ने विशेष योगदान दिया। सबसे प्रखर रूप में भारत के भक्ति आन्दोलन में सामने आयी। उस समय संत ही ऐसे व्यक्तियों में से थे जिन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के बारे में सोचा। इसमें रामानंद एवं उनकी शिष्य–परम्परा के धार्मिक विश्वास की भी विस्तृत चर्चा की है।



रागनी

7. **संत अंक (बारहवें वर्ष का विशेषांक)**– में सर्वप्रथम संत शब्द की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गयी है जिससे संत सम्बन्धी अवधारणा विकसित हो जाती है। इसमें मुख्य रूप से संतों की विस्तृत सूची तैयार की गई है तथा उनकी जानकारी भी दी गयी है।

8. **परशुराम चतुर्वेदी, "उत्तरी भारत की संत परम्परा"**– इसमें इन्होंने भारतीय भक्ति की विकास–यात्रा को सूक्ष्म रूप से दर्शाया है कि किस प्रकार से भक्ति की शुरूआत हुई, विभिन्न सम्प्रदायों का विकास हुआ, फिर इसमें संतों का क्या विशेष योगदान रहा और संत साहित्य का सृजन किस प्रकार से हुआ। इसमें तथ्यों को बहुत ही क्रमानुसार रखा गया है, जिससे अध्ययन की दृष्टि से बहुत अधिक सरल और समायाजित है।

9. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, "हिन्दी साहित्य का इतिहास"** में कहते हैं कि संत रामानंद ने उदारतापूर्वक मनुष्य मात्र को इस सुलभ सगुण भक्ति का अधिकारी माना और धर्मभेद, वर्णभेद, जातिभेद आदि का विचार भक्ति मार्ग से दूर रखा। प्रकरण 4 से हमें संत रामानंद सम्बन्धी किये गये सामाजिक कार्यों की एक संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होती है। इसमें संत रामानंद द्वारा उल्लिखित ग्रंथों पर भी चर्चा की गयी है।

10. **डॉ0 सुनील बाबुराव कुलकर्णी, "भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता"** में सामाजिक समरसता के सैद्धान्तिक स्वरूप को बताते हुए विभिन्न कालों के साहित्य में सामाजिक समरसता किस प्रकार से अभिव्यक्त हुई है, इसका विस्तृत उल्लेख किया गया है। इसमें मुख्य रूप से संत साहित्य में सामाजिक समरसता दिखायी पड़ती है।



रागनी

11. **श्रीमदभगवदगीता**—इसमें समदृष्टि अर्थात् समान दृष्टिकोण की बात की गयी है। उदाहरण स्वरूप एक श्लोक है—

**"विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तनि।**

**शुनि चैव श्वपाके च पंडिता : समदर्शिन।।"**

अर्थात् ज्ञानी व्यक्ति ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चांडाल में एक ही परमात्मा को देखता है।

इस प्रकार के अनेक श्लोक हमें श्रीमदभगवदगीता में देखने को मिल जायेंगे।

12. **श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित, "कबीर ग्रंथावली"** में कबीर की रचनाओं का दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसका मूल भाव है, कबीर की सखियाँ और पद जीवन के सत्य, ईश्वर की प्राप्ति, माया, मन, आशा और तृष्णा जैसे विषयों पर केन्द्रित है।

13. **माधव हाड़ा द्वारा सम्पादित, "कालजयी कवि और उनका काव्य : रैदास"** में रैदास की रचना तथा उनकी सामाजिक चेतना को उद्घाटित किया गया है। उनके काव्य में निहित दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण करते हुए बताया गया है कि उन्होंने माया की निंदा और समानता के मार्ग की महत्ता पर बल दिया गया है।

14. **नंदकिशोर नवल, "सूरदास"** में सूरदास के काव्य और दर्शन का एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसमें सूरदास की रचनाएँ उस समय की सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है।



रागनी

15. **श्रीरामचरितमानस** में तुलसीदास की सामाजिक समरसतावादी दृष्टि, नारी की स्थिति, धार्मिक एकता तथा नैतिक मूल्यों एवं आदर्श की विवेचना सकारात्मक रूप में की गयी है।

16. **रामकिशोर शर्मा, "मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली"** में उनके काव्य के आधार पर उस समय की सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिबिंब मिलता है।

17. **गुरूनानाक देव जी** के पदों में सामाजिक समरसता सम्बन्धी भावना बहुत ही प्रबल रूप में प्रदर्शित हुई है, वे समाज में समानता की बात करते हैं। वे जाति, धर्म, लिंग तथा वर्ग के भेद को नकारते हैं।

18. **बख्शीश सिंह द्वारा सम्पादित, "सूफी कवि बुल्ले शाह"** में उनके जीवन दर्शन तथा काव्य में उनके सामाजिक समरसता संबंधी विचार दिखायी पड़ता है। वे सामाजिक समरसता और समानता की बात करते हैं तथा धार्मिक कट्टरता के विरोधी भी थे।

19. **रामधारी सिंह दिनकर, "संस्कृति के चार अध्याय"** में भारतयी संस्कृति की बहुलता और समन्वय, सांस्कृतिक एकता तथा विविधता और सहिष्णुता का उत्कृष्ट विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

### 3. व्यापक क्षेत्र का वर्णन–

सामाजिक समरसता का संदेश भक्तिकाल में विभिन्न संतों द्वारा दिया गया और उनमें बहुत से संत विख्यात भी हुए। इनमें रामानंद, कबीर, रैदास, गुरु नानक देव, गोस्वामी तुलसीदास आदि संतों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें संत रामानंद ने ही सामाजिक समरसता की नींव रखी तथा इन्हीं से प्रभावित होकर अन्य संतों का मार्ग प्रशस्त हो पाया। रामानंद संस्कृत के आचार्य थे किन्तु उन्होंने

15. **श्रीरामचरितमानस** में तुलसीदास की सामाजिक समरसतावादी दृष्टि, नारी की स्थिति, धार्मिक एकता तथा नैतिक मूल्यों एवं आदर्श की विवेचना सकारात्मक रूप में की गयी है।

16. **रामकिशोर शर्मा, "मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली"** में उनके काव्य के आधार पर उस समय की सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिबिंब मिलता है।

17. **गुरूनानाक देव जी** के पदों में सामाजिक समरसता सम्बन्धी भावना बहुत ही प्रबल रूप में प्रदर्शित हुई है, वे समाज में समानता की बात करते हैं। वे जाति, धर्म, लिंग तथा वर्ग के भेद को नकारते हैं।

18. **बख्शीश सिंह द्वारा सम्पादित, "सूफी कवि बुल्ले शाह"** में उनके जीवन दर्शन तथा काव्य में उनके सामाजिक समरसता संबंधी विचार दिखायी पड़ता है। वे सामाजिक समरसता और समानता की बात करते हैं तथा धार्मिक कट्टरता के विरोधी भी थे।

19. **रामधारी सिंह दिनकर, "संस्कृति के चार अध्याय"** में भारतयी संस्कृति की बहुलता और समन्वय, सांस्कृतिक एकता तथा विविधता और सहिष्णुता का उत्कृष्ट विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

### 3. व्यापक क्षेत्र का वर्णन–

सामाजिक समरसता का संदेश भक्तिकाल में विभिन्न संतों द्वारा दिया गया और उनमें बहुत से संत विख्यात भी हुए। इनमें रामानंद, कबीर, रैदास, गुरू नानक देव, गोस्वामी तुलसीदास आदि संतों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें संत रामानंद ने ही सामाजिक समरसता की नींव रखी तथा इन्हीं से प्रभावित होकर अन्य संतों का मार्ग प्रशस्त हो पाया। रामानंद संस्कृत के आचार्य थे किन्तु उन्होंने



रागनी

शिक्षा देने के लिए आम जनता की भाष हिन्दी को अपनाया। उन्होंने सामाजिक क्रांति समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने के लिए शुरू की न कि केवल धर्म प्रचार के लिए।

मेरे शोध विषय **"सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन"** में रामानंद के सामाजिक समरसता सम्बन्धी कार्यों, उनकी शिष्य परम्परा तथा उनकी इस विचारधारा से प्रभावित संतों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

इसके अन्तर्गत यह भी अध्ययन किया जायेगा कि जब एक समाज एकता के सूत्र में बंधकर कार्य करता है तो उस देश की उन्नति के क्षेत्र किस तरह से प्रभावित होते हैं।

**4. अध्ययन के उद्देश्य–**

प्रस्तुत विषय 'सामाजिक समरसता में संत रामानंद का योगदान : एक अध्ययन' के अध्ययन में मेरे द्वारा संत रामानन्द के द्वारा सामाजिक समरसता की ओर किये गये कार्यों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया जायेगा।

रामानन्द जी के आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और लोकभाषा को अपनाने के विचार उनके पूरे युग को प्रभावित करते हुए दिख पड़ते हैं। आगे चलकर सत्रहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक के परवर्ती सन्तों पर भी यह प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार स्वामी रामानन्द ने एक सामाजिक क्रान्ति की थी, जिसका असर न केवल सन्तों व कवियों तक रहा अपितु गाँधी और विनोबा भावे जैसे महापुरूषों पर भी पड़ा।

इन सबका अध्ययन करते हुए हम यह भी देखेंगे कि सामाजिक समरसता का प्रभाव किस प्रकार से समाज और देश की राजनीति पर भी पड़ता है।



रागनी

देश तथा समाज की सामाजिक समरसता से किस प्रकार देश तथा समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। इससे देश की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित होती है तथा यह प्रभाव सामाजिक समरसता की स्थिति में सकारात्मक तथा अभाव में नकारात्मक भी हो सकता है।

**5. उपयुक्त शोध पद्धतियाँ–**

शोध पद्धति से तात्पर्य है शोध करने की व्यवस्थिति एवं तार्किक प्रक्रिया। मैं अपने शोध विषय के अध्ययन में विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करूँगी–

1. **ऐतिहासिक पद्धति–** जब हम संत रामानंद के तत्कालीन समाज का अध्ययन करेंगे तो हम ऐतिहासिक शोध पद्धति का प्रयोग करेंगे। इसके अन्तर्गत रामानंद के युग (तत्कालीन शासक, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं, तत्कालीन संतों) से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों की जाँचकर उनको क्रमानुसार व्यवस्थित किया जायेगा।

2. **समाजशास्त्रीय पद्धति–** संत रामानंद द्वारा किये गये सामाजिक समरसता सम्बन्धी किये गये कार्यों का मूल्यांकन समाजशास्त्रीय पद्धति द्वारा किया जायेगा। इस पद्धति द्वारा अध्ययन करने से हमें कुछ निश्चित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

3. **साहित्यिक आलोचनात्मक पद्धति–** इस पद्धति द्वारा संत रामानंद द्वारा रचित रचनाओं का अध्ययन किया जायेगा, जिससे कि उनकी विचारधारा, रचनाओं के उद्देश्य तथा उनके भक्ति–दर्शन को समझने में सहायता प्राप्त होगी।

4. **विषयात्मक विश्लेषण पद्धति–** रामानंद सम्बंधी साहित्य के विषयात्मक विश्लेषण पद्धति द्वारा अध्ययन करने से उनके साहित्य में निहित



रागनी

सामाजिक समरसता सम्बन्धी विषयों को जाना जा सकेगा। अन्य संतों के अध्ययन में भी यह पद्धति विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगी।

5. **तुलनात्मक पद्धति–** रामानंद की विचारधारा की तुलना जब हम अन्य समकालीन भक्त कवियों (समाज के प्रति दृष्टिकोण, वर्ण्य व्यवस्था, नारी–शिक्षा, शूद्रों तथा भक्ति सम्बन्धी दृष्टिकोण) से करेंगे तो तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

6. **संदर्भ आधारित पद्धति–** रामानंद की रचनाओं तथा सामाजिक समरसता संबंधी किये गये कार्यों की व्याख्या उनके ऐतिहासिक, सामाजिक और धार्मिक संदर्भों में की जायेगी। यह रामानंद की अभिव्यक्ति और उनके विचारों को उनके युगानुकूल दृष्टि से समझने में सहायक होगी।

7. **सर्वेक्षण पद्धति–** वाराणसी के पंचगंगा घाट पर स्थित रामानंदी सम्प्रदाय के मठ तथा अन्य उनसे सम्बन्धित स्थानों पर जाकर सर्वेक्षण पद्धति की सहायता से शोध सम्बन्धी सामग्री एकत्रित की जायेगी।

## 6. अनुसंधान के अपेक्षित परिणाम–

सामाजिक समसरता का संदेश भक्तिकाल में विभिन्न संतों द्वारा दिया गया। हम लोग संतों में विशेष रूप से कबीर, रैदास, गुरू नानक देव, गोस्वामी तुलसीदास इत्यादि को जानते ही हैं। इनमें संत कबीरदास विशेष रूप से समाज में विख्यात हैं तथा इनके गुरू संत रामानन्द थे जो एक महान संत, संस्कृत आचार्य और समाज सुधारक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश दिया। साथ ही साथ अपने कार्यों के माध्यम से सामाजिक समरसता की स्थापना की।

संत रामानंद की सामाजिक समरसता सम्बन्धी अवधारणा का स्वरूप इनके आगे के तथा आधुनिक काल के संतों तथा विद्वानों में देखा जा सकता है। इस शोध द्वारा संत रामानंद द्वारा किये गये कार्यों के अध्ययन एवं सर्वेक्षण से ज्ञात किया जायेगा कि रामानंद अपने युग तथा आधुनिक युग की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। इस शोध के अपेक्षित परिणाम में उनके सामाजिक समरतसता के योगदान को विभिन्न पहलुओं से आकलित तथा व्याख्यायित किया जायेगा।



रागनी

**अध्याय विभाजन–**

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय **'सामाजिक समरसता में संत रामानन्द का योगदान : एक अध्ययन'** को निम्नलिखित अध्याय में बाँटा है–

1. **प्रथम अध्याय–**

   **भारतीय समाज में समरसता प्रारम्भ से आज तक**

   (क) सामाजिक समरसता का आशय

   (ख) वैदिक काल और महाभारत काल में सामाजिक समरसता

   (ग) मध्यकालीन सामाजिक समरसता

   (घ) आधुनिक काल में सामाजिक समरसता

2. **द्वितीय अध्याय–**

   **रामानंद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

   (क) जीवन–यात्रा

   (ख) प्रेरणा स्रोत एवं जीवन–दर्शन

   (ग) रामानंद की समकालीन परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक)

3. **तृतीय अध्याय–**

   **रामानंद की आध्यात्मिक दृष्टि**

   (क) रामानंद और भक्ति

   (ख) रामभक्ति का प्रोत्साहन

   (ग) सर्वसमाज के लिए भक्ति

   (घ) रामानंदी संप्रदाय



रागनी

4. **चतुर्थ अध्याय–**

**हिन्दी साहित्य पर रामानंद का प्रभाव**

(क) निर्गुण भुक्ति काव्य और रामानंद

(ख) सगुण भक्ति काव्य और रामानंद

(ग) परवर्ती काल के संतों पर इनका प्रभाव

5. **पंचम अध्याय–**

**रामानंद का साहित्यिक योगदान**

(क) रामानंद द्वारा रचित ग्रंथ एवं हिन्दी रचनाएँ

(ख) भाषा–दृष्टि

(ग) युगद्रष्टा युग प्रवर्तक आचार्य

6. **षष्ठम अध्याय–**

**रामानंद के सामाजिक अवदान**

(क) समाज एकता के सेतु

(ख) सामाजिक–धार्मिक क्रान्ति के पुरोधा

7. **सप्तम अध्याय–**

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ

पत्र–पत्रिकाएँ

हिन्दी शब्दकोश



रागनी

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


**आधार ग्रन्थ—**

- उपाध्याय, पं0 कृष्णानान्द (सम्पादक), वैष्णवमताब्जभास्कर :, संस्करण, 2022, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी—221001,
- शास्त्री, पं0 गुलाब झा, रामार्चा—पद्धति, संस्करण—1984, चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी—221001

**सहायक ग्रन्थ—**

- सिंह, कन्हैया, स्वामी रामानन्द : जीवन और दर्शन, संस्करण : 2022, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज—211001
- सिंह, प्रो0 वासुदेव, हिन्दी सन्त काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन, संस्करण : 2001, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी—221001
- सिंह, कृष्ण कुमार, संत काव्य के विकास में वर्ण जाति और वर्ग की भूमिका
- श्रीवास्तव, डॉ० बदरीनारायण, रामानंद—सम्प्रदाय तथा हिन्दी—साहित्य पर उसका प्रभाव (एक गवेषाणात्मक अध्ययन), हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय
- शुक्ल, कुमार, रजनीश, भारतबोध : सनातन और सामयिक, संस्करण—2023 प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
- शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, संस्करण : 2021, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज—211001
- संपादक— डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, संस्करण : 2020, मयूर बुक्स प्रकाशन, दिल्ली—110092
- पाण्डेय, एस0के0, प्राचीन भारत, संस्करण—2014, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रयागराज—211001




शगानी

- सिंह, डॉ0 उदय प्रताप, जगद्गुरू रामानन्दाचार्य श्रीसम्प्रदाय (रामावत) : विविध आयाम, संस्करण, 2011, रामानंदाचार्य सेवा ट्रस्ट, वाराणसी, 221001
- सिंह, डॉ0 उदय प्रताप, संतों के संत कवि रामानंद, संस्करण–2020, इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, दिल्ली–110001
- शर्मा, योगेन्द्र अरुण, युगस्रष्टा स्वामी रामानंद, संस्करण, 2022, हिन्दी साहित्य निकेतन।
- मेनी, डॉ0 धर्मपाल, संतों के धार्मिक विश्वास, संस्करण, 1966, नवजोत पब्लिकेशन, मालेरकोटला, पंजाब।
- संत अंक, गीताप्रेस गोरखपुर।
- चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, उत्तरी भारत की संत परंपरा, संस्करण 2020, लोकभारतीय प्रकाशन, प्रयागराज–211001
- कुलकर्णी, डॉ0 सुनील बाबूराव (सम्पादक), भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता, संस्करण, 2016, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज–211001
- श्रीमद्भगवद्गीता, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट
- दास, श्यामसुंदर (सम्पादक), कबीर, ग्रंथावली, संस्करण, 2019, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज–211001
- हाड़ा, माधव (सम्पादक), कालजयी कवि और उनका काव्य : रैदास, संस्करण, 2022, राजपाल प्रकाशन
- नवल, नंदकिशोर, सूरदास, संस्करण, 2013, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
- श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर
- हाड़ा, माधव (सम्पादक), कालजयी कवि और उनका काव्य : गुरू नानक, संस्करण, 2023, राजपाल प्रकाशन



रागनी

- सिंह, बख्शीश, सूफी कवि बुल्लेशाह, संस्करण, 2014, सी प्रकाशन
- दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, संस्करण 2011, लोकभारतीय प्रकाशन, प्रयागराज–211001
- शुक्ल, रजनीश कुमार, भारतबोध : सनातन और सामयिक, संस्करण, 2023, प्रभात प्रकाशन

**पत्र–पत्रिकाएँ–**

- हंस–पत्रिका
- सरस्वती–पत्रिका
- राष्ट्रधर्म–पत्रिका

**सहायक वेबसाइटें–**

- https://shodhganga.infibnet.ac.in
- https://www.rekhta.org
- https://www.wikipedia.com
- https://shodhgangotri.infibnet.ac.in

**शब्द कोश–**

- हिन्दी शब्द कोश, पारिभाषिक शब्दावली– वर्मा, धीरेन्द्र




रागनी

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

| | |
|---|---|
| ***Selected Language*** | Hindi |

***Submission Information***

| | |
|---|---|
| Author Name | Ragini |
| Title | Samajik Samrasta me Sant Ramanand ka yogdan |
| Paper/Submission ID | 4091356 |
| Submitted by | rjmauryauprtou@gmail.com |
| Submission Date | 2025-07-14 13:41:00 |
| Document type | Synopsis |

***Result Information***

| | |
|---|---|
| Similarity | **0%** |

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

रागनी

DrillBit

llBit Similarity Report

| 0 | 1 | A | A-Satisfactory (0-10%)<br>B-Upgrade (11-40%)<br>C-Poor (41-60%)<br>D-Unacceptable (61-100%) |
|---|---|---|---|
| SIMILARITY % | MATCHED SOURCES | GRADE | |

| OCATION | MATCHED DOMAIN | % | SOURCE TYPE |
|---|---|---|---|
| 1 | Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in | <1 | Publication |